क्या पोलियो विदा ले रहा है?

प्रवीण कुमार

1950 से पोलियो के टीके की नियमित खुराक दिए जाने के साथ ही औद्योगिक देशों से पोलियो को खत्म-सा कर दिया गया। विश्व स्वास्थ्य संगठन ने अब इक्कीसवीं सदी के उत्तरार्ध तक पोलियो के पूरी तरह से सफाए के लिए अभियान छेड़ दिया है। क्या पोलियो (पोलियो माइलाइटिस का लघु रूप) चेचक की तरह दुनिया से लुप्त हो जाएगा?

केंद्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय ने पिछले वर्ष 10 दिसम्बर को राष्ट्रीय पल्स पोलियो दिवस घोषित कर दिया। उस दिन पांच साल से कम उम्र के देश के हर बच्चे को पोलियो ड्रॉप्स या पोलियो वैक्सीन की खुराक देने का आह्वान किया गया था। उल्लेखनीय है कि पोलियो की बीमारी के लिए कोई दवा नहीं है। सन् 2000 में देश भर में पोलियो के मात्र 196 प्रकरण पाए गए थे। इसमें से सर्वाधिक 130 मामले उत्तरप्रदेश में मिले।

पचास के दशक से पोलियो के लिए वैक्सीन देने का काम नियमित रूप से चलने लगा था। इसके बाद से औद्योगिक देशों में पोलियो का नामोनिशान मिट-सा गया था। लेकिन अमरीका (जिसे 1991 में पोलियो मुक्त देश घोषित किया गया था) में अचानक पोलियो के सिर उठाने की बात सामने आई। चिंता इस बात की थी कि कहीं पोलियो वायरस ने परिवर्तित होकर कोई अन्य प्रचण्ड रूप तो नहीं धारण कर लिया।

19 दिसम्बर को उड़ीसा के केंद्रपारा ज़िले में ढाई वर्षीय दो बच्चों को पोलियो से पीड़ित पाया गया। गौरतलब है कि इन्हें ओरल वैक्सीन की खुराक मिल चुकी थी। 1996 में केरल को पोलियो मुक्त घोषित कर दिया गया था लेकिन 4 साल बाद वहां भी पोलियो का एक प्रकरण सामने आया है।

पोलियो एक अत्यंत संक्रामक रोग है जो आर.एन.ए. इंटरोवायरस द्वारा होता है। वायरस के तीन प्रकार होते हैं और हर प्रकार पोलियो का कारण बन सकता है। पोलियो मानव मल में पाए जाने वाले वायरस द्वारा फैलता है। यह वायरस लोगों की उंगलियों से भोजन और फिर शरीर में प्रवेश करता है। शरीर में पहुंचकर यह मुंह और आंतों की दीवारों में घर बनाता है और फिर यहीं बढ़ता है। इसके बाद यह लिम्फेटिक (लसिका) तंत्र और खून के साथ क्षेत्रीय ग्रंथियों तथा कभी-कभी केंद्रीय तंत्रिका तंत्र तक पहुंच जाता है। यह वायरस किसी भी प्राणी या मच्छर के ज़रिए नहीं फैलता और इसे परिपक्व होने में 3 से 21 दिन तक लगते हैं।

लक्षण

इस वायरस से संक्रमित लगभग 85 प्रतिशत बच्चों में यह रोग मामूली रूप ही अख्तियार करता है। उन्हें हल्का बुखार, सिरदर्द व गले में खराश होती है जिससे अधिकतर बच्चे उबर भी जाते हैं। कुछ बच्चों के मेनिन्जस (दिमाग और रीढ़ की हड्डी को ढंकने वाली झिल्लियों) में सूजन आ जाती है। ऐसे बच्चों को बुखार, सिरदर्द, शरीर में दर्द और पीठ व गले में अकड़न होती है। इसके अलावा पैरों और शरीर के निचले हिस्से की मांसपेशियों में लकवा पड़ जाता है। इस वायरस संक्रमण के दिमाग के निचले हिस्से (ब्रेनस्टेम) तक पहुंच जाने की स्थिति में निगलने व श्वसन में आंशिक या पूरी तरह से अवरोध आ सकता है। आम तौर पर तेज़ बुखार के साथ लकवा होना पोलियो की शिनाख्त के लिए पर्याप्त पुख्ता संकेत है। पोलियो की जांच के लिए लम्बर पंचर (रीढ़ के पानी की जांच) की क्रिया की जाती है। इसमें दिमाग व मेरूरज्जु के आसपास के कुछ द्रव के नमूने को विश्लेषण के लिए लिया जाता है।

इलाज

पोलियो के इलाज के लिए कोई उपयुक्त दवा नहीं है। लकवा रहित मामूली पोलियो से पीड़ित लोग थोड़े आराम व दर्द निवारक गोलियों से ठीक हो जाते हैं। लकवाग्रस्त मरीज़ों को फिज़ियो थिरेपी की ज़रूरत